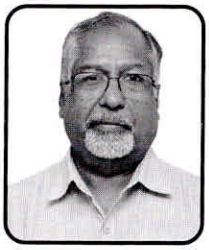

**डॉ. सुधीर कुमार**
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

**निदेशक की कलम से.....**

प्रबुद्ध पाठकों को यह अवगत कराते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की विगत 29 वर्षों से अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका ''प्रवाहिनी'' का नियमित रूप से प्रकाशन कर रहा है। जैसा कि हम जानते हैं कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की है उतनी ही हिंदी में सृजनात्मक कार्य को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं की भी है। उल्लेखनीय है कि कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्र–पत्रिकाएं सभी कार्यालयों के बीच एक वैचारिक एवं सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में इन हिंदी पत्रिकाओं ने सदैव एक महती भूमिका निभाई है। प्रसन्नता की बात यह है कि आज सिर्फ हिंदी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं अपितु हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि संस्थान में राजभाषा नीति का शत–प्रतिशत अनुपालन किया जा रहा है। प्रयास यह रहता है कि राजभाषा नीति के प्रचार–प्रसार के लिए संस्थान रोजमर्रा के कार्यों के साथ–साथ पत्रिकाओं का प्रकाशन, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, जनजागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन करवाए। आज तक हिंदी पत्रिकाएं केवल हिंदी साहित्य, मनोरंजन, राजनीति और सामाजिक प्रसंगों तक ही सीमित थी। परन्तु अब तकनीकी, विज्ञान, अनुसंधान, चिकित्सा आदि विषयों से संबंधित पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं।

संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में अपनी रचनाएं देकर राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अपनी रूचि और समर्पण को प्रदर्शित करते हैं। हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालयी कार्यों के निष्पादन के लिए हिंदी का एक अनुकूल वातावरण तैयार होता है और लेखकों की रचनाधर्मिता को भी प्रोत्साहन मिलता है।

इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारी तथा विद्वत लेखकगण साधुवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत अंक सुधी पाठकों को अत्यन्त उपयोगी, महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लगेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(सुधीर कुमार)